INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 8.428 (SJIF 2026)

शेखावाटी क्षेत्र में शक्ति मंदिरों का संरक्षण, प्रबंधन एवं सतत् विकास : स्थापत्य, मूर्तिकला एवं सांस्कृतिक विरासत के संदर्भ में एक अध्ययन

(Conservation, Management, and Sustainable Development of Shakti Temples in the Shekhawati Region: A Study in the Context of Architecture, Sculpture, and Cultural Heritage)

सुभिता कुमारी
शोधार्थी,
इतिहास विभाग
पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावाटी विश्वविद्यालय,
कटराथल (सीकर), (राजस्थान, भारत)

प्रो. (डॉ.) अशोक कुमार
शोध निर्देशक
इतिहास विभाग
राजकीय कला महाविद्यालय,
कटराथल (सीकर) (राजस्थान, भारत)

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/05.2026-95289339/IRJHIS2605016

सारांश (Abstract) :

भारत में हिंदू धर्म के मंदिर को देवी-देवताओं का निवास स्थान और आध्यात्मिक ऊर्जा का केंद्र माना जाता हैं, जो भारतीय वास्तुकला, स्थापत्य कला और संस्कृति को दर्शाते है। हिंदू धर्म के मंदिरों में शक्ति संप्रदाय (शाक्त धर्म) के मंदिरों का कला, स्थापत्य, सामाजिक संगठन और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति की द्रष्टि से महत्वपूर्ण स्थान हैं। राजस्थान का शेखावाटी क्षेत्र इस दृष्टि से अत्यंत विशिष्ट है। शेखावाटी में स्थित शक्ति मंदिर न केवल धार्मिक आस्था के प्रमुख केंद्र हैं, बल्कि वे स्थापत्य कला और मूर्तिकला के उत्कृष्ट उदाहरण भी प्रस्तुत करते हैं। इन मंदिरों में स्थानीय शिल्पकारों की कला, धार्मिक मान्यताओं और सांस्कृतिक परंपराओं का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। समय के साथ-साथ इन मंदिरों के महत्व में भी वृद्धि हुई है, तथा आज ये धार्मिक पर्यटन के प्रमुख केंद्र बन चुके हैं। हालांकि, वर्तमान समय में शहरीकरण, पर्यावरणीय परिवर्तन, अनियोजित पर्यटन और संसाधनों की कमी के कारण इन मंदिरों की स्थापत्य संरचना और सौंदर्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। कई स्थानों पर मंदिरों की मूल स्थापत्य शैली को नुकसान पहुँचा है तथा मूर्तिकला तथा चित्रकला भी धीरे-धीरे नष्ट हो रही है। ऐसी स्थिति में इन मंदिरों के संरक्षण, उचित प्रबंधन और सतत् विकास की आवश्यकता अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। यदि समय रहते उचित कदम नहीं उठाए गए, तो यह अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर भविष्य में विलुप्त हो सकती है।

मुख्य शब्द : *शेखावाटी, शक्ति मंदिर, स्थापत्य, मूर्ति शिल्प, सांस्कृतिक विरासत*

प्रस्तावना :

शेखावाटी क्षेत्र राजस्थान के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित एक ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र है, जिसमें मुख्य रूप से सीकर, झुंझुनू और चूरू जिले शामिल हैं। यह क्षेत्र अपने समृद्ध इतिहास, भव्य हवेलियों, भित्ति चित्रों और धार्मिक स्थलों के लिए प्रसिद्ध है।

शेखावाटी का नाम यहाँ के शासक शेखावत राजपूतों के नाम पर पड़ा। 18वीं और 19वीं शताब्दी में यह क्षेत्र व्यापारिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध था। यहाँ के व्यापारी समुदाय ने अपनी समृद्धि को दर्शाने के लिए भव्य हवेलियों और मंदिरों का निर्माण कराया, जिन पर सुंदर चित्रकला और नक्काशी की गई। इस क्षेत्र को "ओपन आर्ट गैलरी" भी कहा जाता है, क्योंकि यहाँ की दीवारों और भवनों पर ऐतिहासिक, धार्मिक और सामाजिक विषयों पर आधारित चित्र बनाए गए हैं। धार्मिक दृष्टि से शेखावाटी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यहाँ अनेक मंदिर, तीर्थ स्थल और धार्मिक केंद्र स्थित हैं, जिनमें शक्ति मंदिर विशेष रूप से प्रमुख हैं। देवी उपासना यहाँ की संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है। प्राकृतिक दृष्टि से भी यह क्षेत्र विविधतापूर्ण है। यहाँ अरावली पर्वतमाला के कुछ भाग, रेगिस्तानी क्षेत्र और ग्रामीण परिवेश देखने को मिलता है। इस प्रकार, शेखावाटी क्षेत्र इतिहास, संस्कृति, कला और धर्म का अद्भुत संगम प्रस्तुत करता है।

शेखावाटी क्षेत्र के प्रमुख शक्ति मंदिर :

शेखावाटी क्षेत्र में अनेक प्रसिद्ध शक्ति मंदिर स्थित हैं, जो धार्मिक आस्था और सांस्कृतिक पहचान के महत्वपूर्ण केंद्र हैं। शेखावाटी क्षेत्र के प्रमुख शक्ति मंदिर निम्नलिखित है:

i. **शाकम्भरी माता** (7वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में निर्मित) सकराय, पिपराली तहसील, सीकर - गर्भगृह में रुद्राणी व ब्रह्माणी (सकराय माता) की दो प्रतिमा है। मंदिर का स्थापत्य नागर शैली व हवेली शैली पर आधारित है।

ii. **जीणमाता** (10वीं शताब्दी में निर्मित) रलावता गांव, दांतारामगढ़ तहसील, सीकर - प्राचीन प्रतिमा में दुर्गा के स्वरूप का वर्णन है। वर्तमान प्रतिमा का स्वरूप अष्टभुजा में दुर्गा का है। यह वाममार्गीय तांत्रिक सिद्धपीठ है।

iii. **ओमल–सोमल** (10वीं शताब्दी में निर्मित) सुलेव गाँव, सीकर - प्राचीन मूर्ति षिल्प के कारण विशेष पहचान रखता है

iv. **हिंगलाज माता मंदिर** निमोड़ा गांव, नीम का थाना - प्राकृतिक शिला रूप में स्वयं प्रकट अष्टभुजी। लगभग 1000 फीट ऊंची पहाड़ी पर स्थित है।

v. **चामुंडा माता मंदिर (सिरोही दुर्ग)** नीमकाथाना, सीकर - मां दुर्गा के उग्र स्वरूप की पूजा एवं माता की स्वयंभू प्रतिमा।

vi. **शारदा मंदिर** (20वीं शताब्दी में निर्मित) पिलानी, झुंझुनूं - इसमें मां शारदा की खड़ी अवस्था की प्रतिमा है। यह मंदिर अपनी भव्य स्थापत्य के कारण प्रसिद्ध है।

vii. **मनसा शक्ति मंदिर.** उदयपुरवाटी, झुंझुनूं - 19वीं शताब्दी में तत्कालीन शासक द्वारा निर्मित एवं माता की स्वयंभू प्रतिमा।

viii. **गायत्री शक्तिधाम** (21वीं शताब्दी में निर्मित), चिड़ावा, झुंझुनूं - नवनिर्मित तथा पौराणिक ज्ञान व अध्यात्म का केन्द्र है। जिसके द्वारा भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का आयोजन करवाया जाता है।

ix. **गंगामाता मंदिर** (19 वीं शताब्दी में निर्मित), खेतड़ी, झुंझुनूं - स्थापत्य की राजपूताना हवेली, दुर्ग, स्मारक शैली से प्रभावित।

x. **शीतलामाता मंदिर** - बागोर गांव, उदयपुरवाटी - शेखावाटी की कुलदेवी

xi. **कालका शक्ति मंदिर,** घुड़ी गांव, राजगढ़ तहसील, चूरू - प्राचीन स्थापत्य अवशेष व मनोकामना सिद्धपीठ है।

उपरोक्त मंदिरों की प्रमुख विशेषता यह है कि यह सभी मंदिर प्राकृतिक वातावरण में स्थित हैं, जिससे इनका आध्यात्मिक

महत्त्व बढ़ जाता है। ये मंदिर न केवल धार्मिक आस्था के केंद्र हैं, बल्कि: स्थानीय अर्थव्यवस्था तथा पर्यटन को भी बढ़ावा देते हैं एवं सामाजिक जीवन पर भी सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। इस प्रकार, ये सभी मंदिर शेखावाटी क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

स्थापत्य कला :

शेखावाटी क्षेत्र के शक्ति मंदिरों की स्थापत्य शैली नागर शैली से प्रभावित है। इन मंदिरों की संरचना में मुख्यतः गर्भगृह (Sanctum), मंडप (Hall) और शिखर (Spire) शामिल होते हैं। गर्भगृह मंदिर का सबसे पवित्र भाग होता है, जहाँ देवी की मूर्ति स्थापित होती है। इसके सामने मंडप होता है, जहाँ भक्त एकत्र होकर पूजा-अर्चना करते हैं। शिखर मंदिर की ऊँचाई और भव्यता को दर्शाता है, जिस पर विभिन्न प्रकार की नक्काशी और सजावट की जाती है। मंदिरों के निर्माण में स्थानीय पत्थर, संगमरमर और चूने का उपयोग किया जाता है। यह निर्माण सामग्री न केवल मजबूत होती है, बल्कि क्षेत्रीय जलवायु के अनुकूल भी होती है। शेखावाटी के मंदिरों की एक विशेषता उनकी सजावट है। मंदिरों की दीवारों, स्तंभों और छतों पर सुंदर नक्काशी और चित्रकला देखने को मिलती है। ये चित्र पौराणिक कथाओं, देवी-देवताओं और लोक जीवन के दृश्यों को दर्शाते हैं। इसके अलावा, मंदिरों के प्रवेश द्वार, तोरण और स्तंभों पर भी अत्यंत सूक्ष्म शिल्पकला देखने को मिलती है। इस प्रकार, शेखावाटी के शक्ति मंदिर स्थापत्य कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं, जो धार्मिक भावना के साथ-साथ कलात्मक सौंदर्य को भी अभिव्यक्त करते हैं।

मूर्तिकला का विश्लेषण :

शेखावाटी क्षेत्र के शक्ति मंदिरों की मूर्तिकला भारतीय कला परंपरा का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है। यहाँ स्थापित देवी-देवताओं की मूर्तियाँ न केवल धार्मिक आस्था का केंद्र हैं, बल्कि वे उच्च स्तर की कलात्मकता और शिल्प कौशल को भी दर्शाती हैं। इन मंदिरों में मुख्य रूप से देवी दुर्गा, काली, सरस्वती और अन्य शक्ति स्वरूपों की मूर्तियाँ स्थापित हैं। इन मूर्तियों में देवी को विभिन्न मुद्राओं और भाव-भंगिमाओं में दर्शाया गया है, जो उनकी शक्ति, करुणा और संरक्षण की भूमिका को प्रकट करती हैं। मूर्तियों में अलंकरण का विशेष महत्व होता है। देवी की प्रतिमाओं में आभूषण, वस्त्र और हथियारों का सूक्ष्म चित्रण किया गया है, जो उनकी दिव्यता और महिमा को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त, मंदिरों के स्तंभों, दीवारों और प्रवेश द्वारों पर भी सुंदर नक्काशी देखने को मिलती है। इन नक्काशियों में पौराणिक कथाएँ, देवी-देवताओं के जीवन प्रसंग और लोक जीवन के दृश्य अंकित होते हैं। शेखावाटी की मूर्तिकला की एक विशेषता यह है कि इसमें स्थानीय कला और परंपराओं का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। हालांकि, समय के साथ कई मूर्तियाँ क्षतिग्रस्त हो रही हैं, जिनका संरक्षण आवश्यक है। इस प्रकार, शेखावाटी के शक्ति मंदिरों की मूर्तिकला धार्मिक, सांस्कृतिक और कलात्मक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

शक्ति मंदिरों का सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्व :

शेखावाटी के शक्ति मंदिर क्षेत्र के सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन का केंद्र हैं। यहाँ देवी की पूजा केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का भी महत्वपूर्ण हिस्सा है। नवरात्रि, दुर्गा पूजा और अन्य त्योहारों के दौरान इन मंदिरों में विशेष आयोजन किए जाते हैं। इन अवसरों पर मंदिरों में भजन-कीर्तन, जागरण, यज्ञ और मेलों का आयोजन होता है, जिसमें

बड़ी संख्या में लोग भाग लेते हैं। ये मंदिर सामाजिक एकता और सामुदायिक भावना को भी मजबूत करते हैं। लोग यहाँ एकत्र होकर धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेते हैं और आपसी संबंधों को सुदृढ़ बनाते हैं। इसके अतिरिक्त, ये मंदिर स्थानीय लोक परंपराओं और सांस्कृतिक गतिविधियों को जीवित रखते हैं। यहाँ लोक संगीत, नृत्य और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है। मंदिरों के माध्यम से स्थानीय समाज में नैतिक मूल्यों और धार्मिक शिक्षाओं का प्रसार भी होता है। इस प्रकार, शेखावाटी के शक्ति मंदिर केवल पूजा स्थल नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन के महत्वपूर्ण केंद्र हैं।

संरक्षण की वर्तमान स्थिति :

वर्तमान समय में शेखावाटी क्षेत्र के शक्ति मंदिरों की संरक्षण स्थिति मिश्रित रूप में देखने को मिलती है। कुछ प्रमुख और प्रसिद्ध मंदिरों का रखरखाव अपेक्षाकृत अच्छा है, विशेष रूप से वे मंदिर जो ट्रस्ट या सरकारी निगरानी में हैं। हालांकि, कई छोटे और कम प्रसिद्ध मंदिर उपेक्षा का शिकार हैं। इन मंदिरों में नियमित सफाई, मरम्मत और संरक्षण कार्यों की कमी देखने को मिलती है। पर्यावरणीय प्रभाव, जैसे कि प्रदूषण और मौसम परिवर्तन, भी मंदिरों की संरचना को प्रभावित कर रहे हैं। इसके अलावा, अतिक्रमण और अनियोजित निर्माण के कारण मंदिरों के आसपास का वातावरण बिगड़ रहा है। कुछ स्थानों पर आधुनिक निर्माण कार्यों ने मंदिरों की पारंपरिक स्थापत्य शैली को भी प्रभावित किया है। संरक्षण के लिए जागरूकता की कमी भी एक बड़ी समस्या है। स्थानीय लोगों और प्रशासन के बीच समन्वय की कमी के कारण कई महत्वपूर्ण धरोहरें उपेक्षित रह जाती हैं। इस स्थिति को सुधारने के लिए संगठित प्रयासों और योजनाबद्ध संरक्षण नीतियों की आवश्यकता है।

प्रबंधन व्यवस्था का विश्लेषण :

शेखावाटी के शक्ति मंदिरों का प्रबंधन मुख्य रूप से स्थानीय ट्रस्ट, मंदिर समितियों और पुजारियों द्वारा किया जाता है। ये संस्थाएँ मंदिर के दैनिक संचालन, पूजा-अर्चना और रखरखाव की जिम्मेदारी निभाती हैं। हालांकि, प्रबंधन व्यवस्था सभी मंदिरों में समान नहीं है। कुछ बड़े मंदिरों में सुव्यवस्थित प्रबंधन प्रणाली होती है, जहाँ दान और संसाधनों का सही उपयोग किया जाता है। वहीं, छोटे मंदिरों में संसाधनों की कमी और प्रबंधन की कमजोर व्यवस्था के कारण समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। सरकारी हस्तक्षेप सीमित होने के कारण कई मंदिर उचित सहायता से वंचित रह जाते हैं। इसके अतिरिक्त, पारदर्शिता और जवाबदेही की कमी भी एक महत्वपूर्ण समस्या है। यदि प्रबंधन व्यवस्था को सुदृढ़ किया जाए और आधुनिक तकनीकों का उपयोग किया जाए, तो मंदिरों का संरक्षण और विकास बेहतर ढंग से किया जा सकता है। इस प्रकार, प्रभावी प्रबंधन मंदिरों के दीर्घकालिक संरक्षण के लिए अत्यंत आवश्यक है।

सतत् विकास की आवश्यकता :

शेखावाटी क्षेत्र के शक्ति मंदिरों के संरक्षण के लिए सतत् विकास (Sustainable Development) की अवधारणा अत्यंत महत्वपूर्ण है। सतत् विकास का अर्थ है—ऐसा विकास जो वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करे, लेकिन भविष्य की पीढ़ियों के लिए संसाधनों और सांस्कृतिक धरोहरों को सुरक्षित भी रखे। मंदिरों के संदर्भ में सतत विकास का मुख्य उद्देश्य यह है कि उनके धार्मिक, सांस्कृतिक और स्थापत्य महत्व को बनाए रखते हुए उनका उचित विकास किया जाए। वर्तमान समय में पर्यटन तेजी से बढ़ रहा है, जिससे मंदिरों पर दबाव भी बढ़ रहा है। यदि यह विकास अनियोजित रूप से होता है, तो मंदिरों की मूल संरचना और वातावरण को

नुकसान पहुँच सकता है। इसलिए आवश्यक है कि पर्यटन और संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित किया जाए। मंदिरों के आसपास पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता और संसाधनों के उचित उपयोग पर ध्यान देना चाहिए। स्थानीय समुदाय की भागीदारी भी सतत विकास का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यदि स्थानीय लोग मंदिरों के संरक्षण में सक्रिय रूप से भाग लें, तो यह प्रयास अधिक प्रभावी हो सकता है। इसके अलावा, आधुनिक तकनीकों जैसे डिजिटल डॉक्यूमेंटेशन और स्मार्ट प्रबंधन प्रणाली का उपयोग करके मंदिरों के संरक्षण को बेहतर बनाया जा सकता है। इस प्रकार, सतत विकास के माध्यम से शेखावाटी के शक्ति मंदिरों को लंबे समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है।

चुनौतियाँ एवं समस्याएँ :

शेखावाटी क्षेत्र के शक्ति मंदिरों के संरक्षण और प्रबंधन में अनेक चुनौतियाँ और समस्याएँ सामने आती हैं। सबसे बड़ी समस्या वित्तीय संसाधनों की कमी है। कई मंदिरों के पास पर्याप्त धन नहीं होता, जिससे उनके रखरखाव और मरम्मत कार्य प्रभावित होते हैं। दूसरी महत्वपूर्ण समस्या जागरूकता की कमी है। स्थानीय लोगों और पर्यटकों को इन मंदिरों के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व के बारे में पर्याप्त जानकारी नहीं होती, जिसके कारण वे अनजाने में इन धरोहरों को नुकसान पहुँचा देते हैं। अतिक्रमण भी एक गंभीर समस्या है। कई मंदिरों के आसपास अवैध निर्माण हो रहे हैं, जिससे मंदिरों का मूल स्वरूप और वातावरण प्रभावित हो रहा है। प्रदूषण और पर्यावरणीय परिवर्तन भी मंदिरों के लिए खतरा बन रहे हैं। धूल, धुआँ और मौसम के प्रभाव से मंदिरों की संरचना और मूर्तिकला धीरे-धीरे क्षतिग्रस्त हो रही है। इसके अतिरिक्त, अनियोजित पर्यटन भी एक चुनौती है। अधिक संख्या में पर्यटकों के आने से मंदिरों पर दबाव बढ़ता है, जिससे उनकी संरचना को नुकसान पहुँच सकता है। इन सभी समस्याओं का समाधान किए बिना मंदिरों का संरक्षण संभव नहीं है।

समाधान एवं सुझाव :

शक्ति मंदिरों के सांस्कृतिक और धार्मिक महत्त्व को देखते हुये इन शक्ति मंदिरों का उचित संरक्षण एवं प्रबंधन आवश्यक हो जाता है। अतः इन शक्ति मंदिरों के उचित संरक्षण, प्रबंधन एवं सतत् विकास हेतु निम्नलिखित प्रयास किये जाने चाहिये है :

- सरकार तथा संबंधित संस्थाओं द्वारा विशेष संरक्षण योजनाएँ बनाई जानी चाहिये।
- मंदिरों के रखरखाव और पुनर्स्थापन हेतु पर्याप्त वित्तीय सहायता प्रदान की जानी चाहिये।
- मंदिरों की संरचना, मूर्तिकला एवं भित्ति चित्रों का डिजिटल रिकॉर्ड तैयार किया जाए।
- यह रिकॉर्ड भविष्य में पुनर्निर्माण एवं संरक्षण कार्यों में सहायक होगा।
- स्थानीय निवासियों को संरक्षण कार्यों में सक्रिय रूप से शामिल किया जाए।
- सामुदायिक सहयोग से संरक्षण कार्य अधिक प्रभावी और स्थायी बन सकते हैं।
- मंदिरों में आने वाले पर्यटकों के लिए स्पष्ट नियम एवं दिशानिर्देश बनाए जाऐ।
- भीड़ नियंत्रण एवं संरचना की सुरक्षा के उपाय सुनिश्चित किए जाएँ।
- लोगों को मंदिरों के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्व के बारे में जागरूक किया जाऐ।

- शैक्षणिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों के माध्यम से संरक्षण की भावना विकसित की जाऐ।
- विशेषज्ञों एवं भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की सहायता से संरक्षण कार्य किया जाऐ।
- आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकों का उपयोग कर मंदिरों की मूल संरचना को सुरक्षित रखा जाऐ।
- मंदिरों के संरक्षण के लिए दीर्घकालिक योजनाएँ बनाई जाऐ।
- नियमित निरीक्षण एवं रखरखाव सुनिश्चित किया जाये।

निष्कर्ष :

शेखावाटी क्षेत्र के शक्ति मंदिर धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। ये मंदिर न केवल आस्था के केंद्र हैं, बल्कि वे स्थापत्य कला, मूर्तिकला और सांस्कृतिक विरासत के अद्वितीय उदाहरण भी प्रस्तुत करते हैं। इस शोध के माध्यम से यह स्पष्ट हुआ है कि इन मंदिरों का संरक्षण अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि वर्तमान समय में वे अनेक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। मंदिरों की संरक्षण स्थिति, प्रबंधन व्यवस्था और सतत विकास की आवश्यकता का अध्ययन करने से यह निष्कर्ष निकलता है कि यदि उचित कदम उठाए जाएँ, तो इन धरोहरों को सुरक्षित रखा जा सकता है। सरकार, स्थानीय समुदाय और अन्य संस्थाओं के बीच समन्वय स्थापित करके मंदिरों के संरक्षण और विकास को बेहतर बनाया जा सकता है। इसके अलावा, जागरूकता और शिक्षा के माध्यम से लोगों में इन मंदिरों के प्रति सम्मान और जिम्मेदारी की भावना विकसित की जा सकती है। अंततः, यह कहा जा सकता है कि शेखावाटी के शक्ति मंदिर केवल अतीत की धरोहर नहीं हैं, बल्कि वे वर्तमान और भविष्य की सांस्कृतिक पहचान का भी महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इसलिए, उनका संरक्षण हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है, जिसे हमें पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ निभाना चाहिए।

संदर्भ सूची :

1. शर्मा, जी.एन., ‘‘राजस्थान का इतिहास’’, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2018
2. ओझा, गोविंदराम, ‘‘भारतीय स्थापत्य कला’’, मोतीलाल बनारसीदास, 2015
3. सिंह, आर.के., ‘‘भारतीय मंदिर वास्तुकला’’, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, जयपुर, 2017
4. माथुर, एस.पी., ‘राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत’’ रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 2016
5. पंकज, धरेंद्र, ‘‘शेखावाटी के मंदिर, वास्तुकला, मूर्तिकला’’, महावीर पब्लिकेशन, जयपुर, 2021
6. वशिष्ट, नीलिमा, ‘‘स्कल्पचर्स ट्रेडिशंस ऑफ़ राजस्थान’’, जयपुर 1989
7. श्रीवास्तव, प्रदीप, ‘‘शेखावाटी के भित्ति चित्रों का सांस्कृतिक एवं कलात्मक अध्धयन’’, जयपुर पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 2006
8. मनोहर, आर.सी, ‘‘राजस्थान के प्रमुख शक्तिपीठ’’, पंचशील पब्लिकेशन, जयपुर, 2010
9. जोशी, आर, ‘‘राजस्थान का स्थापत्य और पारिस्थिकी द्रष्टिकोण’’, सूरज पब्लिकेशन, जोधपुर, 2018
10 . राजस्थान की धरोहरे : संरक्षण और चुनौतियाँ, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2021.